(Family Organization)। **सामाजिक विभेदीकरण** का अर्थ है समाज में एक-दूसरे से भिन्न सामाजिक, प्रजातीय, सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताओं वाले समूहों का होना। कुछ विद्वानों का विचार है कि नगरीय और ग्रामीण समूहों, विभिन्न वर्गों और स्थिति-समूहों (Strata) की विभिन्नता का सबसे महत्वपूर्ण कारण समाज में जनसंख्या की वृद्धि होना है। जैसे-जैसे जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि होती है, सामाजिक विभेदीकरण भी बढ़ता है। इसी प्रकार **सामाजिक स्तरीकरण** का अर्थ है समाज का एक-दूसरे से भिन्न स्थितियों वाले अनेक स्तरों में बँटा होना। अधिक जनसंख्या के कारण कुछ व्यक्तियों को अपनी योग्यता और कुशलता में वृद्धि करने का अवसर मिल जाता है, जबकि बहुत-से व्यक्ति अपनी परम्परागत स्थिति को बनाये रखने में भी असफल हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप समाज में निरन्तर नये-नये स्तरों का निर्माण होता रहता है। **पारिवारिक संगठन** और **जनसंख्या** के सम्बन्ध को स्पष्ट करने में **मजरेला** (Mazzarela) ने महत्वपूर्ण निष्कर्ष दिये हैं।[1] आपके अनुसार विवाह और परिवार के विभिन्न स्वरूप जनसंख्यात्मक कारकों द्वारा ही निर्धारित होते हैं। उदाहरण के लिए, छोटे समूहों तथा प्राकृतिक सुविधाओं से सम्पन्न प्रदेशों में बहु-विवाह की प्रथा को अधिक उपयोगी समझा जाता है, जबकि नगरों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होने के कारण जीविका उपार्जित करना एक कठिन कार्य होता है, इसलिए वहाँ एकविवाह (Monogamy) के द्वारा परिवार को संगठित किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार का संगठन बहुत-कुछ उस स्थान के जनसंख्यात्मक पर्यावरण से निर्धारित होता है।

(5) राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं पर प्रभाव (Effect on Political and Social Institutions)

अनेक सिद्धान्तों के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाएँ (जैसे—राजतन्त्र और प्रजातन्त्र, आदि) और विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ (जैसे—दासता, सामन्तवाद, वर्ग-समाज, समतावादी समाज, आदि) जनसंख्या के आकार और घनत्व द्वारा प्रभावित होती हैं। जनसंख्यात्मक पर्यावरण में होने वाला परिवर्तन ही इन संस्थाओं के रूप में परिवर्तन उत्पन्न कर देता है। उदाहरण के लिए, जनसंख्या का आधिक्य होने से एक बहुत बड़ा भाग बिल्कुल अनुपयोगी और दूसरों के आदेशों का अन्धानुकरण करने वाला हो जाता है जिसका अनुचित लाभ उठाकर कुछ व्यक्ति समाज में अधिक शक्ति प्राप्त कर लेते हैं। फलस्वरूप तानाशाही व्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है। जनसंख्या सीमित होने से सभी को अपने विकास के प्रचुर अवसर प्राप्त होते हैं और शिक्षा में वृद्धि होने से प्रजातन्त्र का विकास होता है। इसी प्रकार अधिक जनसंख्या दासता और सामन्तवाद को जन्म देती है, जबकि जनसंख्या सीमित रहने से एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज की स्थापना होती है।

(6) युद्ध पर जनसंख्या का प्रभाव (Effect of Population on War)

अनेक विद्वानों ने युद्ध और जनसंख्या वृद्धि के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया है। माल्थस ने एक नियम के रूप में यह विचार व्यक्त किया था कि युद्ध प्राकृतिक रूप से जनसंख्या की वृद्धि पर नियन्त्रण रखते हैं। इसी प्रकार **डबलिन** (Dublin) का मत था कि "पिछले महायुद्धों का कारण विभिन्न राष्ट्रों पर जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक बढ़ जाना था।"[2] **हेराल्ड** ने भी इसी के अनुरूप विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "जनसंख्या की वृद्धि के कारण अधिक आर्थिक साधनों को प्राप्त करने की आवश्यकता ही युद्धों का कारण रही है।"[3] इस प्रकार सभी विद्वानों ने या तो स्थान की आवश्यकता के कारण अधिक जनसंख्या और युद्ध के बीच सह-सम्बन्ध स्थापित किया है अथवा अधिकाधिक आर्थिक साधनों की इच्छा को इन दोनों के बीच की कड़ी माना है। कुछ विद्वानों का यह भी विचार है कि जनसंख्या की वृद्धि से आरम्भ में राजनीतिक संगठन दुर्बल हो जाता है जिसे संगठित करने के लिए अधिक आर्थिक साधनों की आवश्यकता होती है और इसी के परिणामस्वरूप युद्ध उत्पन्न होते हैं। इन विद्वानों का विचार था कि 19वीं शताब्दी में ऐंग्लो-लैटिन और जर्मन समाज में जनसंख्या की अधिक वृद्धि के कारण वहाँ के आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक जीवन में इतना असन्तुलन उत्पन्न हो गया था कि युद्ध उसका अन्तिम

1 Mazzarela, quoted by Sorokin, *Contemporary Sociological Theories*, p. 405.
2 Dublin, *The Statistician and the Population Problem*, p. 3.
3 Harold, *A Problem of Population*, p. 72.

Scanned with CamScanner

परिणाम हुआ। द्वितीय महायुद्ध के बाद संसार की कुल जनसंख्या दुगनी से भी अधिक हो जाने के कारण बहुत-से व्यक्ति तृतीय महायुद्ध को भी अवश्यम्भावी बता रहे हैं।

(7) जनसंख्या और क्रान्ति (Population and Revolution)

क्रान्ति और जनसंख्यात्मक परिवर्तन एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। कार्ली (Karli) ने महत्वपूर्ण निष्कर्ष देते हुए कहा है कि "जिस अवधि में जनसंख्या में अधिक परिवर्तन हो रहे होते हैं, उसी अवधि में व्यक्तियों में मानसिक अस्थिरता भी सबसे अधिक होती है। यही अस्थिरता क्रान्ति और आन्तरिक संकटों का कारण है। जनसंख्या में अधिक ह्रास या वृद्धि होने से समाज के विभिन्न वर्गों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी उतार-चढ़ाव होता है। इस प्रक्रिया में निम्न वर्ग के व्यक्तियों को उच्च वर्ग में जाने से रोकने के जितने अधिक प्रयत्न किये जाते हैं, क्रान्ति की सम्भावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती है।"[1] कार्ली के सिद्धान्त का यही सार है। यह भी कहा जाता है कि जनसंख्या में अधिक वृद्धि होने पर सभी व्यक्ति आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त नहीं कर पाते। इसके परिणामस्वरूप एक ओर व्यक्तियों में आन्तरिक तनाव उत्पन्न होता है और दूसरी ओर, राजनीतिक संगठन के प्रति उनके मन में अविश्वास उत्पन्न हो जाता है। ये दोनों ही परिस्थितियाँ क्रान्ति का कारण बन जाती हैं। जनसंख्या में कमी हो जाने से सभी साधनों का अधिक-से-अधिक उपयोग करने के लिए समाज को फिर से व्यवस्थित करना आवश्यक हो जाता है। इस कार्य में एक ओर आन्तरिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है और दूसरी ओर, उस समाज की मानवीय शक्ति कम हो जाने के कारण दूसरे समाज इसका अनुचित लाभ उठाने लगते हैं। यह स्थिति भी कभी-कभी क्रान्ति का कारण बन जाती है लेकिन सामान्य रूप से जनसंख्या में कमी होने की अपेक्षा जनसंख्या की वृद्धि से क्रान्ति का खतरा अधिक रहता है।

(8) जनसंख्या के आकार द्वारा विचारों में परिवर्तन (Change in Ideas Through Population-Size)

यदि हम प्रश्न करें कि समानता और प्रजातन्त्र के विकास के प्रति कौन-से कारक उत्तरदायी हैं, तब इसका उत्तर दिया जाता है कि जनसंख्या का आकार, घनत्व, विभिन्नता (Heterogeneity) और गतिशीलता। इसका अर्थ यह है कि जनसंख्या का घनत्व अधिक होने और व्यक्तियों में गतिशीलता की प्रवृत्ति होने से समानता और प्रजातन्त्र की विचारधारा का अधिक सरलता से प्रसार (Diffusion) हो जाता है। कुछ विद्वानों[2] का कथन है कि जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि होने से सामाजिक विभेदीकरण में वृद्धि होती है जिसके कारण व्यक्ति समूह के नियन्त्रण से स्वतन्त्र हो जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति जाति तथा प्रजाति की संकीर्णता से निकलकर सम्पूर्ण मानवता के बारे में सोचने लगता है। इसके अतिरिक्त, जनसंख्या के आकार और घनत्व में वृद्धि होने से विभिन्न प्रजातियों, वर्गों, धर्मों, परिवारों आदि के व्यक्तियों के बीच सम्पर्क भी बढ़ता है और उनमें एक-दूसरे को समझने की भावना उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, समानता की विचारधारा का सबसे अधिक विकास रोमन साम्राज्य और फ्रांस की अन्तिम क्रान्ति के दौरान हुआ। यह वह समय था जब वहाँ जनसंख्या के आकार, घनत्व और गतिशीलता में सबसे अधिक वृद्धि हुई थी। वर्तमान में भी जनसंख्या के आकार और घनत्व में अधिक वृद्धि होने के कारण ही प्रजातन्त्र का सबसे अधिक विकास हो रहा है। यह कथन इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि स्वतन्त्रता, समानता और न्याय की विचारधारा गाँवों की अपेक्षा नगरों में अधिक देखने को मिलती है क्योंकि नगरों में जनसंख्या का आकार और घनत्व गाँवों से कहीं अधिक होता है।

(9) जनसंख्या का समाज की प्रगति और विनाश से सम्बन्ध (Population *Versus* Progress and Decay of Societies)

जनांकिकी सम्प्रदाय (Demographic School) ने समाज के उद्विकास अर्थात् इसकी उत्पत्ति, विकास तथा विनाश को भी कुछ जनसंख्यात्मक नियमों द्वारा स्पष्ट किया है। इसमें सबसे प्रमुख सिद्धान्त रोमन समाजवादी प्रो. गिनी ने प्रस्तुत किया है।[3] गिनी समाज के उद्विकास को एक चक्रीय प्रक्रिया

1 Quoted by Sorokin, *Social and Cultural Mobility.*
2 Views particularly based on the theory of 'Bugle'.
3 Corrado Gini, *Demographic Factors in the Evolutions of Nation*, pp. 1-47.

Scanned with CamScanner

(cyclical process) के द्वारा स्पष्ट किया है जिसमें जनसंख्यात्मक कारकों के कारण विनाश और विकास की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। आपका विचार है कि **आरम्भिक स्तर** में समाज में किसी प्रकार का विभेदीकरण अथवा ऊँच-नीच नहीं होती। इस समय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है। धीरे-धीरे जनसंख्या का आकार इतना अधिक बढ़ जाता है कि अतिरिक्त व्यक्तियों को या तो स्थान-परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है अथवा युद्ध की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। इस स्थिति में समाज के अधिक शक्तिशाली, उत्साही और अनुभवी व्यक्ति ऐसे स्थानों को छोड़कर सैन्य शक्ति को संगठित करने लगते हैं। **दूसरे स्तर** में उपर्युक्त कारणों से समाज की जनसंख्या कम होने लगती है। इस स्तर में निम्न वर्ग के व्यक्ति उच्च वर्ग में जाने लगते हैं और इस प्रकार समाज का ढाँचा अधिक प्रजातान्त्रिक हो जाता है। इस समय जीवन-स्तर में विकास होता है और आर्थिक व्यवस्था अधिक संगठित हो जाती है। कला, साहित्य और उद्योगों में विकास होता है और इस प्रकार समाज की चारों ओर से प्रगति होती है लेकिन यह स्तर भी अधिक समय तक नहीं रहता। कुछ समय बाद **तीसरा स्तर** आरम्भ हो जाता है, जबकि नगरों के आकर्षण के कारण गाँवों की जनसंख्या लगातार नगरों में बसती जाती है और इस प्रकार गाँवों में कम जनसंख्या (Depopulation) की समस्या पैदा हो जाती है। इससे एक ओर कृषि में ह्रास होता है तथा उद्योगों के लिए कच्चा माल उपलब्ध नहीं हो पाता जबकि दूसरी ओर, नगरीय जनसंख्या अधिक हो जाने के कारण नगरों में अधिक खाद्यान्न और कच्चे माल की आवश्यकता महसूस की जाने लगती है। कच्चे माल के अभाव में उद्योगों का ह्रास होता है और प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। सरकार अपने खर्चों को पूरा करने के लिए अधिक कर (Tax) लगाना आरम्भ कर देती है। जनसामान्य का आर्थिक स्तर गिर जाने से वे इसका विरोध करते हैं और फलस्वरूप झगड़ों, सामाजिक संकटों, अव्यवस्था और वर्ग-संघर्षों में वृद्धि होती है। यह वह अन्तिम स्तर होता है, जबकि समाज की सभ्यता का विनाश हो जाता है। यही कारण है कि रोम की जिस आर्थिक प्रगति के आधार पर सिसरो ने यह दावा किया था कि यह सभ्यता कम-से-कम अगले दस हजार वर्षों तक जीवित रहेगी, वह सिसरो की मृत्यु के पाँच सौ वर्ष बाद ही बिल्कुल नष्ट हो गयी। यही गिनी के सिद्धान्त का निष्कर्ष है।

जनसंख्यात्मक कारकों के प्रभाव का मूल्यांकन
(EVALUATION OF DEMOGRAPHIC FACTORS)

सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्यात्मक कारकों का उपयुक्त प्रभाव बहुत सन्देह का विषय है। वास्तव में, जनसंख्या सामाजिक परिवर्तन का एकमात्र कारक नहीं है बल्कि इसे आंशिक रूप से ही मान्यता दी जा सकती है। जनांकिकी विद्वानों का विचार है कि जनसंख्या के आकार और इसकी संरचना में होने वाले परिवर्तन ही हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैचारिक तथा सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करते हैं। वास्तव में, ऐसे निष्कर्षों को सार्वभौमिक नहीं कहा जा सकता। अनेक आदिम समाजों में जनसंख्या के आकार में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है लेकिन उनका सामाजिक संगठन पहले की अपेक्षा बहुत अधिक बदल गया है। हॉबहाउस और गिन्सबर्ग ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि अनेक समाजों में जनसंख्या के घनत्व में कोई परिवर्तन न होने पर भी वहाँ विवाह के स्वरूप, विश्वासों और व्यवहार प्रतिमानों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गये।[1]

सॉरोकिन का कथन है कि **जनसंख्या के घनत्व और सामाजिक गतिशीलता के बीच एक सम्बन्ध अवश्य है लेकिन इसमें किसी प्रकार की घनिष्ठता नहीं है।**[2] माल्थस और उनके समकालीन अनेक विद्वानों ने सम्पूर्ण आर्थिक संरचना को जनसंख्यात्मक विशेषताओं पर निर्भर दिखाया है लेकिन वास्तविकता यह है कि उत्पादन का स्वरूप तथा प्रौद्योगिकी का विकास प्रमुख रूप से मानव ज्ञान पर निर्भर है। जनसंख्या की वृद्धि से उत्प्रवास, युद्धों, संघर्षों, निर्धनता और बेकारी, आदि की दशा उत्पन्न हो सकती है लेकिन ये परिस्थितियाँ पूर्णतया जनसंख्या पर ही आधारित नहीं होतीं। इसके अतिरिक्त, जनसंख्यात्मक विशेषताएँ विभिन्न समाजों को भिन्न-भिन्न रूप से प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, एशियाई समाजों में जनसंख्या की वृद्धि ने अनेक समस्याएँ उत्पन्न की हैं, जबकि यूरोपीय समाजों में जनसंख्या की वृद्धि सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हुई है।

1 Quoted in Westermark's *History to Marriage.*
2 Pritirim Sorokin, *Social and Cultural Mobility*, Chap. XVI.

Scanned with CamScanner

सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं पर तो जनसंख्या के प्रभाव को स्पष्ट करना पूर्णतया असंगत प्रतीत होता है। साधारणतया जनसंख्या में बिना कोई परिवर्तन हुए ही तानाशाही और सामन्तवाद के स्थान पर लोकतन्त्रीय अथवा साम्यवादी राजनीतिक संस्थाओं का विकास हुआ है। राजनीतिक संस्थाओं के इस परिवर्तन का कारण सामाजिक चेतना और नवजागरण है, जनसंख्या का प्रभाव नहीं। जहाँ तक युद्ध और जनसंख्या के सम्बन्ध को सिद्ध करने का प्रश्न है, इसे किसी प्रकार भी प्रमाणित नहीं किया जा सकता। पिछले 50 वर्षों में संसार के लगभग सभी समाजों की जनसंख्या में वृद्धि हुई है लेकिन इस वृद्धि के कारण किसी बड़े युद्ध को प्रोत्साहन न मिलकर स्थायी शान्ति के लिए प्रयत्न किये जा रहे हैं। यद्यपि कार्ली (Karli) ने जनसंख्या की वृद्धि को क्रान्ति का सबसे प्रमुख कारण माना है लेकिन यह कथन भ्रमपूर्ण है। वास्तविकता यह है कि संसार की अनेक महान् क्रान्तियाँ जनसंख्या में बिना कोई वृद्धि हुए ही उत्पन्न हो गयीं, जबकि भारत में जनसंख्या की वृद्धि सबसे अधिक होने पर भी यहाँ की सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण जल्दी ही किसी क्रान्ति की सम्भावना नहीं की जा सकती।

सॉरोकिन द्वारा दिया गया यह निष्कर्ष बहुत सही प्रतीत होता है कि जनसंख्या की वृद्धि से समतावादी विचारों में कोई वृद्धि नहीं होती। सच तो यह है कि जनसंख्या के आकार और घनत्व में होने वाली प्रत्येक वृद्धि के साथ सामाजिक स्तरीकरण और वर्गगत शोषण में वृद्धि ही हुई है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि जनसंख्यात्मक प्रभावों का अध्ययन करने वाले विद्वानों के सभी निष्कर्ष पूर्णतया सही नहीं हैं लेकिन इन विचारों में आंशिक सत्यता अवश्य है। यदि हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि जनसंख्या के आकार में होने वाला परिवर्तन समाज के सामने नयी आवश्यकताएँ और व्यवहार के नये ढंग उत्पन्न करता है। यही दशाएँ सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देती हैं। इन सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए **सॉरोकिन** ने यह निष्कर्ष दिया है कि "यदि हम जनांकिकी सम्प्रदाय की कुछ त्रुटियों और इसके एकपक्षीय विचारों को उसमें से निकाल दें, तब निश्चय ही सामाजिक घटनाओं को स्पष्ट करने में इस सम्प्रदाय का योगदान महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।"

Scanned with CamScanner